17 अक्टूबर 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 11
अक्टूबर(द्वितीय), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

शास्त्री विद्यार्थियों के लिए समर्पित-

24 वाँ आध्यात्मिक e-शिक्षण शिविर सम्पन्न

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 10 से 17 अक्टूबर 2021 तक जिनागम के महत्त्वपूर्ण विषयों का व्यवस्थित अध्ययन कराने वाला 24 वाँ आध्यात्मिक e-शिक्षण शिविर पूजन, जिनेन्द्रभक्ति, प्रवचन, कक्षा आदि अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

इस आयोजन में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के 189, आचार्य अकलंक महाविद्यालय बांसवाड़ा के 27, आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा के 51, शाश्वतधाम उदयपुर के 66 एवं ज्ञानोदय भोपाल के 47 - इसप्रकार 380 विद्यार्थियों सहित हजारों की संख्या में साधर्मियों ने जैनदर्शन के सैद्धान्तिक विषयों का गहराई से अध्ययन किया।

10 अक्टूबर 2021 को प्रात: आयोजित उद्घाटन समारोह में ध्वजारोहण श्रीमान ताराचंदजी सोगानी, जयपुर ने एवं शिविर उद्घाटन श्रीमान ध्याताजी बजाज सुपुत्र श्री प्रेमचंदजी बजाज परिवार, कोटा ने किया। तत्पश्चात् अनिकाजी जैन सुपुत्री श्रीमती श्री धर्मपत्नी श्री अश्विनीजी जैन परिवार, दिल्ली ने आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी एवं श्रीमान चम्पालालजी भबूतमलजी भण्डारी परिवार, बैंगलोर ने गुरुदेवश्री के चित्र का अनावरण किया।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीमान सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर के मंगल सान्निध्य में सभा की अध्यक्षता श्रीमान प्रेमचंदजी बजाज कोटा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमान बसंतभाई एम. दोषी मुंबई, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमान महिपालजी "ज्ञायक" परिवार बांसवाड़ा, श्रीमान अशोकजी जैन परिवार भोपाल, श्रीमान वीरेशजी कासलीवाल परिवार सूरत एवं श्रीमान नितिनभाई सी. शाह मुंबई के अतिरिक्त बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

चैंपियंस ऑफ चेंज राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल

दिनांक 30 सितम्बर, 2021 को श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल को मुंबई की कोलाबा स्थित ताजमहल होटल में महाराष्ट्र और गोवा के राज्यपाल भगतसिंहजी कोश्यारी द्वारा चैम्पीयंस ऑफ़ चेंज पुरस्कार से नवाज़ा गया। उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश के.जी. बालाकृष्णन एवं उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ज्ञानसुधाजी मिश्रा ने शिक्षा और उद्यमिता के क्षेत्र में जयपुर से श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के नाम का चयन किया।

"चैंपियंस ऑफ चेंज" पुरस्कार इंटरैक्टिव फोरम ऑन इंडियन इकॉनमी संस्था द्वारा सकारात्मक प्रयासों से विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन लाने वाले राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, उद्यमियों को दिया जाता रहा है। गांधीवादी मूल्यों, स्वच्छता, सामुदायिक सेवा और सामाजिक विकास आदि उद्देश्य इसमें प्रमुख हैं।

एस.पी. भारिल्ल दो बेस्ट्सेलर किताब "जीने के रहस्य 18 चैप्टर्स" व "ज़िंदगी बेनक़ाब" के लेखक हैं। पिछले 22 वर्षों से अपने प्रेरक सेमिनारों व ट्रेनिंग के माध्यम से भारत में उद्यमिता को बढ़ावा दे रहे हैं। जिसके कारण आज लाखों लोगों ने अपने सपनों को साकार किया है। आपके सेमिनारों को हज़ारों की संख्या में देश के कोने-कोने से आने वाले उद्यमियों द्वारा खूब सराहा जाता है।

श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल का सम्मान करते हुए राज्यपाल श्री भगतसिंह कोश्यारी

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

सर्वोदय अहिंसा अभियान

पटाखों

लाभ 0%

हानि 100%

सोचिये! और समझिये!! निर्णय कीजिये!!!

यदि आप नेत्रदान और रक्तदान के समर्थक हैं तो पटाखे न चलायें, क्योंकि पटाखों से आँखों की रोशनी चली जाती है।

यदि आप प्रकृति प्रेमी और पर्यावरण प्रेमी हैं तो पटाखे न चलायें, क्योंकि पटाखों से प्रकृति और पर्यावरण को नुकसान होता है।

अरबों रुपयों की व्यर्थ में बर्बादी

पटाखों के रूप में हम एक दिन में अरबों रुपयों में आग लगा देते हैं, जिससे नुकसान ही नुकसान है, फायदा कुछ नहीं। जितने रुपयों के पटाखे हम एक दिन में फूँक देते हैं, उतने रुपयों से हजारों परिवारों का पेट पाला जा सकता है।

आग लगने से संपत्ति का नुकसान

पटाखों से कई स्थानों पर भीषण आग लग जाती है, जिससे करोंड़ों-अरबों रुपयों की सम्पत्ति उसमें जलकर नष्ट हो जाती है और अनेक परिवारों का जीवन अंधकारमय हो जाता है। ये हादसे न सिर्फ दीपावली पर होते हैं, अपितु जब भी पटाखों का प्रयोग होता है, तब ऐसे हादसे पूरे साल भर होते रहते हैं।

अरबों-अनन्तों जीव-जन्तुओं-प्राणियों की हत्या

हमें आग की आँच/तपन से डर लगता है तो पटाखों की भयंकर आग से छोटे-छोटे प्राणियों का जल मरना तो निश्चित है। विज्ञान कहता है कि पटाखों की आवाज से अनेक पशुओं के गर्भ गिर जाते हैं, उसकी विषैली वायु उन्हें अंधा-बहरा बना देती है। महापर्व पर महापाप का यह तांडव कितना उचित है?

वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी का प्रदूषण

पटाखों की तेज आवाज से ध्वनि प्रदूषण, पटाखों के धुँए एवं उसकी गैसों से वायु प्रदूषण, पटाखा जलने के बाद उसकी अवशिष्ट सामग्री से जल एवं मिट्टी का प्रदूषण होता है, जो कि हम सभी के जीवन के लिए प्राणघातक है। पूरे वर्ष पर्यावरण की सँभाल करना तथा एक दिन उसे यूँ बर्बाद करना क्या समझदार लोगों का काम है?

पटाखों पर पाबंदी : राजस्थान पत्रिका की खबर पर राज्य मानवाधिकार आयोग ने लिया प्रसंज्ञान

अब आयोग ने कहा, सीएस-कलक्टर रोकें पटाखों का प्रदूषण

पहले चिकित्सकों ने किया था आगाह

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जयपुर . चिकित्सकों के बाद अब राज्य मानवाधिकार आयोग ने कोरोना को देखते हुए जनहित में दीपावली पर पटाखों का प्रदूषण रोकने को कहा है। आयोग ने मुख्य सचिव, गृह सचिव और स्वास्थ्य सचिव, सभी जिला कलक्टर और पुलिस अधीक्षकों को इस बारे में निर्देश जारी कर 12 अक्टूबर तक रिपोर्ट भी मांगी है।

आयोग ने रविवार को राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित खबर के आधार पर जनहित से जुड़े इस मामले में प्रसंज्ञान लिया। खबर में बताया था कि कोरोना महामारी के चलते पटाखों का प्रदूषण रोकने की आवश्यकता है। इसे लेकर सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन रोग विभागाध्यक्ष सहित अन्य वरिष्ठ चिकित्सकों ने प्राचार्य को पत्र लिखा है।

कोरोना के चलते मेडिसिन रोग विभाग के डॉक्टरों ने दिया प्राचार्य को प्रस्ताव
डॉक्टरों ने कहा-पटाखे रहित हो दिवाली, नहीं तो होगी बड़ी मुसीबत
धुएं से अस्थमा, सीओपीडी और कोरोना मरीजों के लिए खतरा

डॉक्टरों का कहना था कि पटाखों से प्रदूषण होगा और उससे कोरोना रोगियों के समक्ष सांस लेने में दिक्कत बढ सकती है।

इलाज से बेहतर सावधानी

मानवाधिकार आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष न्यायाधीश महेशचंद्र शर्मा ने आदेश में चिकित्सकों की ओर से जताई गई चिंता का हवाला दिया है। आयोग अध्यक्ष ने कहा कि इस समय पूरा संसार कोरोना महामारी से पीड़ित है। दीपावली पर पटाखे चले तो कोरोना रोगियों की संख्या काफी बढ़ सकती है। कोरोना रोग का प्रभाव श्वसन तंत्र पर होता है। प्रदूषण फैलने से कोरोना रोगियों को परेशानी होगी। आयोग अध्यक्ष ने कहा कि इस सम्बन्ध में वरिष्ठ चिकित्सकों की ओर से चिंता जताई गई है। इलाज से बेहतर सावधानी है, ऐसे में प्रदूषण रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

आयोजक : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन
प्रायोजक : श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
पोस्टर मँगायें एवं अभियान के फोटो/समाचार भेजें
संयोजक : संजय शास्त्री, जयपुर 97859-99100

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

निवेदक श्री प्रेमचन्द बजाज
संस्थापक–संचालक
मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा

पत्रिका सिटीजन

राजस्थान पत्रिका 02
जयपुर, रविवार, 04 अक्टूबर, 2020

सूर्यास्त:
सूर्योदय:

कोरोना के चलते मेडिसिन रोग विभाग के डॉक्टरों ने दिया प्राचार्य को प्रस्ताव

डॉक्टरों ने कहा-पटाखे रहित हो दिवाली, नहीं तो होगी बड़ी मुसीबत

धुएं से अस्थमा, सीओपीडी और कोरोना मरीजों के लिए खतरा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. कोविड-19 महामारी के चलते प्रदेश के सीनियर डॉक्टरों ने इस बार दिवाली पर पटाखों पर पूरी तरह रोक लगाने की मांग की है। इस

हर घर पर लगेंगे जागरूकता के स्टिकर

शहरवासियों का जागरूक करने के उद्देश्य से हैरिटेज निगम और ग्रेटर निगम की ओर से हर घर पर स्टिकर लगाए जाएंगे। शनिवार को

जयपुर जिले में मिले 424 संक्रमित, दो की मौत

जयपुर. जिले में शनिवार को कोविड-19 के 424 नए मामले सामने आए हैं। वहीं दो की मौत दर्ज की गई है। कुल संक्रमितों की संख्या अब 33.758 और

(24) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

चतुर्थ अध्याय का सार (मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र का निरूपण)

(गतांक से आगे...)

अब यह जीव राग-द्वेष के विचार में कैसे फँसता है, कैसे राग-द्वेष की चैन बनाता है, उसका वर्णन करते हैं –

राग-द्वेष का विधान व विस्तार....

राग-द्वेष के विस्तार का कारण बताते हुए पण्डितजी कहते हैं कि यह जीव शरीर को अच्छा मानता है, तो शरीर को अच्छी लगने वाली अवस्थाओं को भी अच्छा मानता है, फिर शरीर की इष्ट अवस्थाओं के कारणभूत पदार्थों को भी अच्छा मानता है, फिर वह पदार्थ जिसके माध्यम से मिलते हैं, उन्हें भी अच्छा मानता है।

जैसे उपहार/गिफ्ट आदि अच्छे लगते हैं तो उसे देने वालों को भी अच्छा मानता है। शरीर को अच्छा मानता है, तो शरीर को अच्छी लगने वाली पत्नी को भी अच्छा मानता है, फिर पत्नी को अच्छे लगने वाले उसके परिवार वालों को भी अच्छा मानता है, फिर परिवार वालों को अच्छे लगने वाले उनके सगे-सम्बन्धियों को भी अच्छा मानता है। इसप्रकार राग-द्वेष का विस्तार करता जाता है। एक के बाद एक कड़ी से कड़ी जोडता जाता है, राग-द्वेष की चैन बनाता जाता है।

जिसे जिनवाणी पढ़ना अच्छा लगता है, उसे जिनवाणी पढ़ाने वाले भी अच्छे लगने लगते हैं, फिर जो साथ में बैठकर जिनवाणी पढ़ते हैं, वे भी अच्छे लगने लगते हैं। अपना बेटा अच्छा लगता है, तो बेटे को अच्छे लगने वाले उसके मित्र भी अच्छे लगने लगते हैं। देखते ही देखते मित्र के मित्रों से मित्रता हो जाती है। शत्रु के मित्रों से शत्रुता हो जाती है। अतः जिससे राग करता है, उसके कारणों से भी राग करता है। जिससे द्वेष करता है, उसके कारणों से भी द्वेष करता है।

तथा कुछ पदार्थ ऐसे भी हैं जो अपने शरीर की इष्ट-अनिष्ट अवस्था में कारण नहीं हैं; फिर भी उन्हें इष्ट-अनिष्ट मानता है। जैसे- गाय आदि के बच्चों से अपने शरीर की अवस्था में कुछ भी अच्छा नहीं होता, फिर भी उनसे राग करता है और कुत्ते-बिल्ली आदि के बच्चों से अपने शरीर की अवस्था में कुछ भी बुरा नहीं होता; फिर भी उनसे द्वेष करता है।

एक कार्य के होने में अनेक कारण होते हैं। उनमें जो कार्य इसे अच्छे लगते हैं, उनके कारणों से राग करता है और जो कार्य इसे बुरे लगते हैं, उनके कारणों से द्वेष करता है। इसप्रकार राग-द्वेष की शृंखला बढ़ती जाती है, दूर-दूर तक राग-द्वेष का फैलाव होता जाता है। इसप्रकार पर-पदार्थों में इष्ट-अनिष्ट बुद्धि होने पर जो राग-द्वेषरूप परिणमन होता है, उसी का नाम मिथ्याचारित्र है।

यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि यदि राग-द्वेष इष्ट-अनिष्ट की मान्यता सहित हो, तो वे मिथ्यात्व के बंध के कारण हैं और यदि इष्ट-अनिष्ट की मान्यता के बिना हो, तो मात्र चारित्रमोहनीय की कमजोरी के कारण हुए होने से मिथ्यात्व के बंध के कारण नहीं हैं। इसप्रकार राग-द्वेष के विधान/विस्तार का वर्णन किया। (क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

साथ ही आपके देश-विदेश में किए गए आध्यात्मिक प्रवचनों ने अहिंसा आदि नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया है। आप आध्यात्मिक सिद्धांतों की शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने हेतु अनेक चेरिटेबल संस्थाओं का कुशल नेतृत्व कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर आपके लाखों की संख्या में सब्सक्राइबर्स और व्यूअर्ज़ हैं, जिससे प्रेरित होकर लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए हैं।

आपको 2006 में समाज कल्याण में उल्लेखनीय योगदान हेतु "इंदिरा गांधी प्रियदर्शिनी" अवार्ड से भी नवाज़ा गया था।

समारोह के पश्चात् मीडिया से मुख़ातिब होते हुए भारिल्लजी ने कहा कि यह पुरस्कार उन सभी लोगों को समर्पित है, जो मेरे साथ इस मिशन में जुड़े हुए हैं। हम लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने हेतु प्रयासरत हैं। उद्यमिता से व्यक्ति आत्मनिर्भर बनता है, उसका आत्मसम्मान बढ़ता है, परिवार में ख़ुशहाली आती है, और शिक्षा से चारित्रिक विकास होता है। चरित्र के बिना सफलता अधूरी है, इसीलिए उद्यम से जीवन में सफलता और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा से चारित्रिक विकास करना मेरा मिशन है। करोड़ों भारतीयों में उद्यम को चलाने के लिए आवश्यक कौशलता और योग्यता विकसित करके हम सभी मिलकर विश्व पटल पर भारत देश की अलग पहचान बना सकते हैं। इस पुरस्कार से हमारे मिशन को एक गति मिली है, जिसके लिए मैं राज्यपाल भगतसिंह कोश्यारीजी और देश के पूर्व मुख्य न्यायधीश के.जी. बालाकृष्णनजी, न्यायाधीश ज्ञानसुधा मिश्राजी के प्रति धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

समारोह में महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस, महाराष्ट्र के गृह मंत्री दिलीप वालसे पाटिल, महाराष्ट्र कांग्रेस के अध्यक्ष नाना पटोले, पद्मश्री से सम्मानित सिन्धुताई सपकाल, फ़िल्म जगत से जैकी श्रॉफ़, दिया मिर्ज़ा, नवाज़ुद्दीन सिद्धिकी, उदित नारायण व मोतीलाल ओसवाल को भी नवाज़ा गया।

सामाजिक कार्यों में उल्लेखनीय योगदान हेतु चैंपियन ऑफ चेंज अवार्ड समारोह का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता रहा है। पूर्व में यह पुरस्कार तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन, गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत, झारखण्ड के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन, पतंजलि आयुर्वेद के आचार्य बालकृष्ण, केन्द्रीयमंत्री अनुराग ठाकुर, दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, हेमा मालिनी समेत कई उद्यमियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को मिल चुका है। ●

जिसमें मेरा अपनापन है....

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(वीर)

सामान्य आतमा तो अनन्त पर मैं तो स्वयं अकेला हूँ।
मैं हूँ अपने में स्वयं पूर्ण अन–आतम से अलबेला हूँ।।
मैं तो केवल वह आतम हूँ जिसमें मेरा अपनापन हो।
जिसमें मेरा अपनापन हो जिसमें ही मेरा सब कुछ हो।। १।।

यद्यपि अनन्तगुणधारी मैं पर–आतम का गुण एक नहीं।
यद्यपि मैं अन्य आतमा सा पर अन्य आतमा कभी नहीं।।
यद्यपि असंख्य प्रदेशी हूँ पर का प्रदेश प्रवेश नहीं।
परिणमनशील पर द्रव्यों सा पर परणति का अवशेष नहीं।। २।।

सबके समान ही गुण पर्यय सबके समान प्रदेशमयी।
सबके समान ही सबकुछ है सबके समान चैतन्यमयी।।
यद्यपि सब कुछ सबके समान पर पर से भिन्न निराला हूँ।
सब रमें निरन्तर अपने में अपने में रमनेवाला हूँ।। ३।।

अपने में अपनापन होना अपने में ही जमना–रमना।
अपने में स्वयं समा जाना अपने में तन्मय हो जाना।।
है धर्म यही बस इसको ही तो धर्मधुरन्धर[१] धर्म कहें।
इसको कहते हैं रत्नत्रय इसमें निज को अर्पण कर दें।। ४।।

इसमें निज को अर्पण कर दें इसको निज का सर्वस्व गिनें।
इसको जीवन में अपना लें जीवन को बस इसमय कर दें।।
यह जीवन सच्चा जीवन है निज को इसमें अर्पण कर दें।
अब अधिक कहें क्या हे भगवन्! समभावों से अर्पण कर दें।। ५।।

शुद्धोपयोग शुधपरिणति को निश्चय रत्नत्रय कहते हैं।
अर सहचारी शुभभावों को व्यवहार रतनत्रय कहते हैं।।
तदनुकूल जड़ तन परिणति व्यवहार धर्म कहलाती है।
पर परमारथ से देखें तो वह धर्म नहीं हो सकती है।। ६।।

अपने–अपने भावानुसार ज्ञानी के यह सब होता है।
अपने–अपने भावानुसार यह यथायोग्य फल देता है।।
पर मैं तो अपने शुद्धभाव का एकमात्र अधिनायक हूँ।
मैं ही मेरा कर्त्ता–धर्त्ता अर मैं ही मेरा ज्ञायक हूँ।। ७।।

रे मैं ही मेरा ज्ञायक हूँ अर मैं ही मेरा ध्यायक हूँ।
मैं ही मेरा हूँ ज्ञेय–ध्येय मैं ही मेरा आराधक हूँ।।
मैं ही मेरा आराधक हूँ अर मैं मेरा आराध्य अरे।
मैं तो बस केवल मैं ही हूँ और साधना–साध्य अरे।।८।।

मैं पर परमेष्ठी हूँ ही नहीं निज की परमेष्ठी पर्यायें।
भी मुझसे अन्य रूप ही हैं; क्योंकि मैं तो पर्याय नहीं।।
मैं द्रव्यरूप हूँ मूलवस्तु मेरा अपनापन मुझमें है।
मैं तो बस केवल मैं ही हूँ मैं हूँ मैं हूँ बस मैं ही हूँ।।९।।

मैं परमशुद्ध निश्चय नय का, मैं परमभावग्राही नय का।
ही विषय अनोखा अद्भुत हूँ, अर मेरे इस जीवनभर का।।
निष्कर्ष मात्र बस इतना है बस मैं ही हूँ बस मैं ही हूँ।
बस मैं ही हूँ बस मैं ही हूँ बस मैं ही हूँ बस मैं ही हूँ।।१०।।

(दोहा)

मैं तो केवल एक ही स्वयं आतमाराम।
अपने में ही नित रमूँ राम आतमाराम।।११।।

१. धर्म की धुरा को धारण करने वाले तीर्थंकरदेव

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित वीतराग विज्ञान (मासिक) व जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक) पत्रिकाओं सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने व समस्याओं के समाधान के लिए सम्पर्क करें–
अखिल जैन शास्त्री :– 7412078704
Email :– veetragvigyanjpp@gmail.com

सर्वोदय अहिंसा अभियान संचालित करें

पटाखों से होने वाली जन–धन की हानि एवं पर्यावरण सुरक्षा हेतु **अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन** द्वारा **श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई** के सहयोग संचालित सर्वोदय अहिंसा अभियान के अंतर्गत प्रकाशित पोस्टर्स निःशुल्क भेजे जा रहे हैं। आप 9785999100 पर अपना पूरा पता एवं पोस्टर्स की संख्या भेज कर प्राप्त कर सकते हैं।

– संजय शास्त्री, संयोजक सर्वोदय अहिंसा अभियान

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – **www.vitragvani.com**
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब **vitragvani** एप पर भी उपलब्ध है।

वर्ष-44 अंक-11, 17 अक्टूबर 2021 6 जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक)

साभार दैनिक भास्कर नागपुर • 1 नवंबर, 2015

डॉक्टर्स ही नहीं खुद जांच करने वाली लैब और पटाखा व्यापारी चौंके, कहा ये खतरनाक

लैब में साबितः पटाखों में सीसा और पारा

दैनिक भास्कर
सुरक्षित दीपावली

देश में पहली बार
- चार श्रेणियों में पटाखों की वैज्ञानिक जांच
- रिपोर्ट पर देश के जाने-माने डॉक्टर्स की राय

त्योहारों की रौनक पटाखों और रोशनी के बिना संभव ही नहीं है। लेकिन ये हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए खतरनाक भी हैं। इनका इस्तेमाल एक सीमा तक ही सही है। इसीलिए हमने वैज्ञानिक तरह से चार स्पेसिफिक श्रेणियों के पटाखों की जांच कराई। रिपोर्ट में पता चला कि इसमें सीसा और पारा जैसे खतरनाक तत्व बड़ी मात्रा में मिले हुए हैं, जो 10-10 साल तक शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं। इसकी रिपोर्ट को हमने डॉक्टर्स से साझा किया ताकि आपको इसके खतरे स्पष्ट पता चल सकें। इसी खतरे को जानने में आपकी मदद करती ये विशेष रिपोर्ट।

हर श्रेणी के पटाखों को खास बनाने के लिए मिलाते हैं अलग तत्व और रसायन

धमाके वालेः प्रेशर के लिए भरते हैं गन पाउडर की गोली

- *रस्सी बम में 0.74 फीसदी सल्फर और 0.73 फीसदी कार्बन मिला। दूसरे वाइस टेस्ट में आवाज अधिकतम 117 डेसिबल मिली।*

- ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. संगीता वर्ती के अनुसार तेज आवाज के पटाखों से बचें। क्योंकि सामान्यतौर पर व्यक्ति 85 डेसिबल तक की आवाज सुन सकता है। हर तीन डेसिबल के बाद खतरे बढ़ते जाते हैं।

सीमा : ऐसे पटाखे चलाते समय कम से कम 6 मीटर की दूरी बनाए रखें।

संख्या : ऐसे पटाखे एक साथ न छोड़ें। आवाज खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है।

रोशनी वालेः हर रंग के लिए अलग-अलग सॉल्ट

- *फुलझड़ी में पारा 14.21 पीपीएम (प्रति 10 लाख ग्राम) मिला। सीसा 16.30 पीपीएम मिला।*
- पारा हमारे पाचन तंत्र को कमजोर करता है। सीसा बच्चों के नर्वस सिस्टम और किडनी को नुकसान पहुंचाता है।

- चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉ. आशोक महाशूर कहते हैं कि 6 साल से कम के बच्चे और फेफड़ों के मरीजों के लिए पारा और सीसा दोनों घातक हैं।

पारा मेडिकल उपकरणों में भी इस्तेमाल नहीं होता।

सीमा : फेफड़ों के मरीज आतिशबाजी से दूर रहें। बच्चे फुलझड़ी आदि ही चलाएं।

संख्या : रोशनी वाले 5 से 10 पटाखे ही काफी हैं क्योंकि ये खतरनाक हैं।

उड़ने वालेः हल्की फ्लूगैस उड़ाती है रॉकेट

- *12 रंगों में फूटने वाले रॉकेट में कार्बन 32.68 फीसदी मिला। इसमें सीसा और पारा पाया गया।*
- दिवाली के ही दौरान अलग-अलग प्रदूषक तत्व करीब डेढ़ से आठ गुना तक ज्यादा हो जाते हैं वायुमंडल में।

- हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ.आरआर कासलीवाल के अनुसार रॉकेट के प्रदूषण से कैंसर, अस्थमा, मिर्गी जैसे रोग हो सकते हैं।

कार्बन वाले पटाखों से खांसी का दौरा आ सकता है।

सीमा : हाईब्लडप्रेशर, अस्थमा आदि के मरीज एक भी मिनट ऐसे पटाखों के बीच न रहें।

संख्या : बच्चों को दिखाने के लिए खुद रॉकेट छोड़ें। 5-6 रॉकेट काफी हैं।

घूमने वालेः नली से फ्लूगैस निकलती है तो घूमती है

- *चकरी में 100 ग्राम में 0.73 फीसदी सल्फर और 8 फीसदी कार्बन पाया गया। जो खतरनाक है।*

- डॉ. एसके गुप्ता बताते हैं कि सल्फर और कार्बन दोनों दिल और फेफड़ों के लिए बेहद खतरनाक है। इससे निकलने वाला धुंआ बीमारी की जड़ है। चकरी को बच्चों को दिखाने के चक्कर में घर में तो बिल्कुल न जलाएं।

सीमा : इसे ऐसी जगह ही जलाएं जहां पर खुली हवा हो। ताकि धुंआ निकल सके।

संख्या : बच्चों के ज्यादा जिद करने पर भी कम से कम चलाएं।

आँखों एवं कानों पर बुरा प्रभाव

पटाखों की तेज रोशनी से तथा बारूद आँखों में जाने से आँखें खराब हो जाती हैं। इसकी तेज आवाज से कानों के पर्देतक फट जाते हैं। श्वास के रोगियों के लिए यह महापर्व आराधना का नहीं अपितु महा यातना का पर्व बन जाता है, उन्हें अनचाही कैद का सामना करना पड़ता है। इस कुकृत्य के जिम्मेदार क्या पटाखा फोड़ने वाले नहीं हैं?

ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा

पटाखों के जलने से निकलने वाली कार्बन डाई ऑक्साइड एवं हानिकारक गैसों से वायुमंडल दूषित होता है, जिससे ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा निरंतर बढ़ रहा है।

ईश्वर की वाणी का अपमान

किसी भी धर्म में हिंसा करने, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने का उपदेश नहीं दिया गया है। हम पटाखे फोड़कर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं तथा अनेक जीव-जन्तुओं को जिन्दा जलाकर ईश्वर की वाणी का अपमान/अनादर कर रहे हैं।

शारीरिक क्षति एवं जनहानि

बम विस्फोट करने वालों को हम आतंकवादी कहते हैं तो विश्व में प्रतिवर्ष पटाखों की आग से लाखों लोग अंधे/बहरे/घायल हो जाते हैं तथा हजारों की मृत्यु हो जाती है। आपके पटाखा प्रेम के दुष्परिणाम देखने के लिए दीपावली के अगले दिन अपने नगर के अस्पताल में जरूर जायें और फिर स्वयं विचार करें कि हम कौन हैं?

पटाखा फैक्ट्री में आग, 54 मरे

फैक्ट्री का मलबा अभी भी सुलग रहा है। भारी गर्मी से कुछ बिना फटे पटाखों में विस्फोट होने की आशंका जताई है। पुलिस ने पांच एकड़ में फैले फैक्ट्री के आसपास के क्षेत्र को घेर लिया है। दमकलकर्मी आग बुझाने में लगे हैं। इसके बाद मलबे को हटाने का काम शुरू किया जा सकेगा।

शिवकाशी में भीषण दुर्घटना, 70 से ज्यादा घायल

तमिलनाडु में शिवकाशी जिले के मुदलीपट्टी गांव के पास पटाखा कारखाने में एकाएक हुआ धमाका
घटना के वक्त 300 लोग थे परिसर के अंदर, परिसर के सभी 48 शेड जलकर खाक हो गए।
पटाखों का सबसे ज्यादा कारोबार यहीं। 80 फीसदी पटाखों का उत्पादन। 1000 करोड़ रुपये करीब का वार्षिक पटाखा कारोबार

निवेदक
अजितप्रसाद जैन

अध्यक्ष :
श्री दिगम्बर जैन दिव्य देशना ट्रस्ट
राजपुर रोड, दिल्ली

त्योहार की खुशियाँ देने में हैं, लेने में नहीं!

निवेदन : इस पावन पर्व पर एक पेड़ अवश्य लगायें!

संयोजक : संजय शास्त्री, जयपुर
आयोजक : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन
प्रायोजक : श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
प्रमुख सहयोगी : श्री प्रेमचन्द जी बजाज, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा

निवेदन - इस पत्रिका को विद्यालय, मंदिर, अस्पताल आदि सार्वजनिक स्थल पर लगवायें, जहाँ अधिक से अधिक लोग इस पढ़ सकें। अभियान का हिस्सा बनने हेतु सम्पर्क करें। 9785 999100

(पृष्ठ 1 का शेष...)

का समागम प्राप्त हुआ। मंचासीन अतिथियों का स्वागत डॉ. शांतिकुमारजी पाटील एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया।

शिविर का परिचय पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने तथा संस्था का परिचय व सभा का संचालन पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। मंगलाचरण विदुषी प्रतीतिजी मोदी ने किया।

शिविर रथ के प्रमुख सारथी :- श्रीमती सुनीता धर्मपत्नी प्रेमचंदजी बजाज कोटा परिवार, श्रीमती सुशीला धर्मपत्नी अजितप्रसादजी जैन - वैभवजी जैन परिवार दिल्ली, श्रीमती रेखा धर्मपत्नी संजयजी दीवान - तीर्थेश दीवान - मोक्षा दीवान परिवार सूरत, श्रीमती कुसुम धर्मपत्नी प्रदीपजी चौधरी किशनगढ़, श्रीमती आरती धर्मपत्नी अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्रीमान विपुलजी के. मोटनी मुंबई एवं श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता।

प्रवचनों की शृंखला :- प्रातः डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अरहंत चैनल के माध्यम से प्रवचनसार ज्ञानतत्त्व प्रज्ञापन अधिकार पर प्रवचन का प्रसारण एवं आध्यात्मिकसत्पुरूष श्रीकानजीस्वामी के इष्टोपदेश ग्रन्थ के आधार पर सी.डी. प्रवचनों का प्रसारण किया गया। तत्पश्चात् तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा समयसार बंधाधिकार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

दोपहर में बाबू युगलकिशोरजी कोटा के नियमसार एवं अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर के कारण-कार्य व्यवस्था विषय पर वीडियो प्रवचन तथा रात्रि में मुख्य प्रवचन के रूप में अध्यात्मवेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा स्वरचित नवीन कृति दोहा व रोला शतक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रवचनसार व्याख्यानमाला के अन्तर्गत शुद्धोपयोगाधिकार पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, ज्ञानाधिकार व सुखाधिकार पर पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, शुभपरिणाम अधिकार पर पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, द्रव्यसामान्य प्रज्ञापन अधिकार पर पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुंबई, द्रव्यविशेष प्रज्ञापन अधिकार पर डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, ज्ञानज्ञेयविभाग अधिकार पर पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे राजकोट, चरणानुयोगसूचक-चूलिका पर डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्य जयपुर एवं शुभोपयोग प्रज्ञापन व पंचरत्न अधिकार पर पण्डित शैलेशभाई शाह तलोद के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिविर में संचालित कक्षाएँ :- बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा सप्त व्यसन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनसार, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा सर्वविशुद्धज्ञानाधिकार, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नयचक्र, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली द्वारा स्वयंभू स्त्रोत : एक परिचय, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा मिथ्याज्ञान-मिथ्याचारित्र का स्वरूप, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ द्वारा जैन श्रुत परम्परा का परिचय, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा देवागम स्तोत्र, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा पंचलब्धि, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं पण्डित शुभमजी शास्त्री भोपाल द्वारा पुण्य और पाप का स्वरूप विषय पर कक्षाएँ आयोजित की गई।

पूजन एवं जिनेन्द्रभक्ति का समस्त आयोजन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रिमांशुजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री द्वारा किया गया। कार्यक्रमों का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। शिविर के ऑनलाइन संचालन में पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित गौरवजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

पारस टी.वी. पर पुरुषार्थसिद्ध्युपाय

युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा प्रतिदिन टी.वी. के पारस चैनल पर रात्रि 10 बजे छहढाला ग्रन्थ पर नियमित प्रवचनों के सफलतापूर्वक प्रसारण के बाद अब **9 अक्टूबर 2021 से रोजाना रात्रि 10 बजे** आचार्य अमृतचंद देव द्वारा लिखित पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रन्थ पर प्रवचनों का प्रसारण किया जा रहा है।

आप स्वयं लाभ लेवें एवं औरों को भी बताये।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2021

प्रति,